ज्ञान शांति मैत्री

हिंदी शिक्षण अधिगम केंद्र

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा

द्वारा

'जैन साहित्य में रामकथा' विषय पर दिनांकः 14 अक्टूबर, 2019 को आयोजित विशेष व्याख्यान

प्रतिवेदन/रिपोर्ट

हिंदी शिक्षण अधिगम केंद्र द्वारा 'जैन साहित्य में रामकथा' विषय पर 14-10-2019 को महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय वर्धा के तुलसी भवन, ग़ालिब सभागार में विशेषज्ञ व्याख्यान का आयोजन किया गया। यह केंद्र द्वारा आयोजित 11वां विशेषज्ञ व्याख्यान था। जिसमें जैन साहित्य और राम काव्य के निष्णात विद्वान डॉ. योगेंद्र नाथ शर्मा 'अरुण' ने उपर्युक्त विषय पर अपना व्याख्यान दिया। कार्यक्रम की अध्यक्षता मा. कुलपति प्रो. रजनीश कुमार शुक्ल ने किया। स्वागत वक्तव्य प्रो. कृष्णकुमार सिंह (निदेशक, हिंदी शिक्षण अधिगम केंद्र) ने दिया। कार्यक्रम का संचालन डॉ. संजय तिवारी (रिसर्च एसोशिएट, हिंदी शिक्षण अधिगम केंद्र) ने किया और डॉ. रूपेश कुमार सिंह (सहायक निदेशक, हिंदी शिक्षण अधिगम केंद्र) ने केंद्र सहित विश्वविद्यालय की तरफ़ से सबके प्रति आभार ज्ञापित किया।

अपने व्याख्यान में डॉ. योगेंद्र नाथ शर्मा ‘अरुण’ ने कहा कि पुराण और इतिहास की सीमाओं को लाँघकर 'राम' और 'रामकथा' जन-आस्था का केंद्र बन चुकी है। राम का आदर्श चरित्र देश-काल की सीमाओं को तोड़कर विश्व साहित्य को भी प्रभावित करता रहा है। संस्कृत, पाली, प्राकृत, अपभ्रंश तथा हिंदी के साथ-साथ असमिया, बंगला, उड़िया, तमिल एवं कन्नड़ आदि भाषाओं के कवियों ने 'रामकथा' को बहुत आदर एवं निष्ठा के साथ ग्रहण करके युगानुरूप अभिव्यक्ति का माध्यम बनाया है।

यह एक विलक्षण बात है कि 'रामकथा' का विस्तार लोक रंजनकारिणी 'कृष्ण कथा' की तुलना में कहीं अधिक हुआ है। जैन धर्मावलंबी कवियों ने 'रामकथा' को अत्यंत आदर और श्रद्धा के साथ ग्रहण करके धर्म एवं दर्शन के साथ-साथ जैन समाज एवं संस्कृति की अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम बनाया। रामकथा के प्रसिद्ध अध्येता फादर कामिल बुल्के ने इस पर विस्तार से काम किया है।

प्राकृत एवं अपभ्रंश में राम और कृष्ण के पावन चरित्रों को जैन कवियों ने अपने प्रबंध काव्यों का आधार बनाकर जैन धर्म एवं दर्शन की मान्यताओं की अभिव्यक्ति सशक्त ढंग से की है। प्रबंध शैली में रचित अपभ्रंश भाषा का

बहुचर्चित महाकाव्य 'पउम चरिउ' महाकवि स्वयंभु देव की रचना है। अपभ्रंश के वाल्मीकि कहे जाने वाले स्व्यंभु जैन धर्मावलम्बी थे।

जैन रामायण की परंपरा के पीछे जैन धर्म की एक विशिष्ट अवधारणा मुख्य रूप से रही है। जैन धर्म में 'त्रिषष्ठी शलाका पुरुष' अर्थात् तिरसठ शलाका पुरुषों का स्थान सर्वोच्च है। इन 63 शलाका पुरुषों में 24 तीर्थंकर, 12 चक्रवर्ती, 9 बलदेव, 9 वासुदेव तथा 9 प्रतिवासुदेव माने गये हैं। इनमें से प्रत्येक 'बलदेव' का समकालिक एक 'वासुदेव' तथा उसका प्रतिद्वंद्वी एक 'प्रतिवासुदेव' होता है। जैन धर्म की इस विलक्षण 63 शलाका पुरुष परंपरा में राम आठवें 'बलदेव' के रूप में पूज्य शलाका पुरुष हैं और उनके साथ इसी क्रम में 'लक्ष्मण' आठवें 'वासुदेव' तथा 'रावण' आठवें 'प्रतिवासुदेव' के रूप में माने गये हैं। इस प्रकार हम देखते हैं कि जैन धर्म एवं संस्कृति में 'राम' को तीर्थंकरों तथा चक्रवर्तियों के साथ सर्वोच्च स्थान दिया गया है। जैन साहित्य में 'रामकथा' संस्कृत की परंपरानुसार 'रामायण' अथवा तुलसीदास की भाँति 'रामचरित' के नाम से नहीं रची गयी, बल्कि 'राम' का नाम जैन रामकथा काव्यों में 'पउम' अर्थात 'पद्म' रखकर 'पउम चरिउ' (पद्म चरित) कहा गया है।

असल में जैन साहित्य में रामकथा की दो धाराएँ प्राप्त होती हैं। एक है महाकवि विमल सूरि प्रणीत 'पउम चरियं' की समृद्ध परंपरा। दूसरी है, गुणभद्र आचार्य द्वारा रचित 'उत्तर पुराण' की परंपरा। वस्तुतः महाकवि विमल सूरि की प्राकृत भाषा में रचित रामकथा परंपरा ही आचार्य रविषेण के संस्कृत छायानुवाद 'पद्म चरितं' के माध्यम से बढ़ती हुई महाकवि स्वयंभू देव तक 'पउम चरितं' में मिलती है।

'जैन रामायण का रूप प्रचालित हिंदू रामकथा से अलग है। जैन रामायण में रावण-वध 'राम' के द्वारा नहीं होता बल्कि 'वासुदेव' लक्ष्मण ही 'प्रतिवासुदेव' रावण का युद्ध में वध करते हैं, जिस कारण मृत्यु के पश्चात लक्ष्मण नरकगामी होते हैं और राम अपने अनुज की मृत्यु के शोक में जैन धर्म की दीक्षा ले लेते हैं। इस विलक्षण परिवर्तन का ही यह परिणाम हुआ है कि मर्यादा पुरुषोत्तम राम के 'शील-शक्ति-सौंदर्य' वाले जनप्रिय स्वरूप के स्थान पर जैन रामकथा के नायक 'राम' के चरित्र में केवल 'शील एवं सौंदर्य' की ही अभिव्यक्ति कवियों द्वारा की गयी और शौर्य-पराक्रम का समावेश जैन कवियों द्वारा राम के चरित्र में नहीं किया जा सका।

'अपभ्रंश के वाल्मीकि' कहे जाने वाले महाकवि स्वयंभू देव द्वारा रचित महाकाव्य 'पउम चरिउ' का तो हमारे महाकवि तुलसीदास द्वारा प्रणीत 'रामचरित मानस' पर अत्यंत गहरा और व्यापक प्रभाव पड़ा है, जिसे देखकर महापंडित राहुल सांकृत्यायन ने जोर देकर कहा है-"तुलसी बाबा ने स्वयंभू की जैन रामायण जरूर देखी होगी।" आश्चर्य तो यह है कि दोहा, चौपाई छंद की परंपरा जैन कवियों की ही देन है और 'मानस' के अनेक प्रसंगों का तो मूल स्रोत ही जैन रामायण 'पउम चरिउ' है। जैन रामकथा के स्वरूप में मूलभूत परिवर्तन के कारण 'राम' के चरित्र में भी परिवर्तन दिखायी देता है, जिसे जानना निश्चय ही रोचक और महत्वपूर्ण है। जैन रामायण 'पउम चरिउ' के अनुसार 'राम' दशरथ और उनकी पटरानी 'अपराजिता' के पुत्र हैं। जैन रामकथा काव्यों में महाकवि तुलसीदास की तरह 'राम' को 'परब्रह्म' नहीं माना गया, बल्कि जैन कवियों ने 'सहज मानवीय पात्र' मानकर उनके चरित्र में सरलता, निष्कपटता, निर्भीकता और सर्वोपरि

आचरण की पवित्रता जैसे गुणों का समावेश कराया है। वीर एवं पराक्रमी राम को अभिमान छू तक नहीं पाता, बल्कि त्याग, विनम्रता, सौम्यता और पर दुःख कातरता जैसे उदात्त जीवन मूल्यों से 'राम' का चरित्र अभिमंडित है।

अध्यक्षीय वक्तव्य देते हुए मा. कुलपति प्रो. रजनीश कुमार शुक्ल ने कहा कि अपभ्रंश के बिना साहित्य को देखा और समझा नहीं जा सकता। हिन्दी का राम काव्य संस्कृत, पालि, प्राकृत और अपभ्रंशों की निरंतरता में ही विकसित हुआ है। इसे इसी तरह देखा जाना चाहिए। राम कथा वास्तव में भारत की कथा है। इसमें भारत का समस्त दर्शन प्रदर्शित होता है। यह मानव जीवन के व्यवस्थापन की कहानी है।